संवेदना से परिपूर्ण 'केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियाँ'

प्रो.(डॉ.) ज़ोहरा अफ़ज़ल

एवं

डॉ. अमृता सिंह

सारांश : दैवीय आपदा के आने तथा उससे होने वाली क्षति का अनुमान लगाना मानव जाति के लिए असंभव है| भूकंप, बाढ़, अतिवृष्टि (बहुत अधिक वर्षा), अनावृष्टि (सूखा या अकाल), भूस्खलन, बिजली गिरना, बादलों का फटना जैसी विपती या त्रासदी के आने पर जनजीवन सदा ही प्रभावित होता रहता है| केदारनाथ, बदरीनाथ, हेमकुंड साहिब, उत्तराखंड सहित अनेक स्थलों पर बरपा विनाश सम्पूर्ण मानव जाति को अंदर तक झकझोर कर चला गया| आपदाग्रस्त केदारनाथ क्षेत्र से संबंधित ये कहानियाँ एक ओर मानवीयता के उजले तो दूसरे ओर श्याम पक्ष को सफलतापूर्ण दर्शाती हैं| ये कहानियाँ जीवन के इस सत्य को भी उजागर करती हैं कि जीवन कभी रुकता नहीं जिसका सशक्त उदाहरण हैं आपदा पीड़ित लोग जो किसी प्रकार स्वयं को संभालकर नए ढंग से अपने सवजनों तथा स्वयं के लिए जीवन की नई सुरुआत करते हैं|

बीज शब्द : केदारनाथ, आपदा, मानवीयता

रमेश पोखरियाल 'निशंक' का प्राकृतिक आपदाओं पर आधारित कहानी-संग्रह *'केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियाँ'* में अत्यंत संवेदनशीलता समाई है | प्राकृतिक आपदा का कहर केदारनाथ सहित बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, हेमकुंड साहिब सहित उत्तराखंड के अनेक स्थानों पर बरपा, जिसके कारण चारों ओर केवल विनाश-ही-विनाश नज़र आ रहा था | इस विनाशकालीन स्थिति में मानव मूल्य व कर्तव्यनिष्ठ लोग आगे आए तो कहीं मनुष्य का अमानवीय पक्ष भी देखने को मिला | मानवीय संवेदनाओं को झकझोर कर रख देने वाली ये कहानियाँ सहसा ही मर्म को छू जाती हैं |

प्रस्तुत संग्रह में 22 कहानियाँ सम्मिलित हैं जिसमें प्रथम कहानी *'और मैं कुछ नहीं कर सका'* में लेखक ने एक घोड़े के माध्यम से प्रेम, अपनापन, वफादारी, कर्तव्यनिष्ठता जैसे मूल्यों को उभारा है | प्रत्येक वर्ष यात्रा आरम्भ होते ही *दयाल* अपने घोड़े *डब्बू* के संग आजीविका हेतु केदारनाथ की यात्रा के लिए प्रस्थान करता है | डब्बू को वह तथा उसका पूरा परिवार पशु नहीं अपितु अपने पुत्र के समान प्रेम करते | डब्बू भी उन्हें अपने परिवार की भांति ही प्रेम करता था | एक पशु होने के पश्चात् भी उसमें संवेदनाएँ कूट-कूटकर भरी थीं | दयाल जब केदारनाथ यात्रा को मध्य में छोड़ घर जाने का निर्णय लेता है, तो इसी ख़ुशी में वह अपने परिवारवालों के लिए लाए गए उपहार जब डब्बू को दिखाता है तो डब्बू भी उन्हें देखकर ख़ुशी से हिनहिनाने लगता है | माँ के हाथों का खाना, दयाल की पत्नी सुशीला के दुलार तथा पुत्री रेनु के संग खेलना व उसकी खिलखिलाती हँसी की स्मृतियाँ उसे व्याकुल कर देती हैं, किन्तु अचानक तेज़ वर्षा के कारण उनकी ख़ुशी कुछ ही पल में पीड़ा में

परिवर्तित हो जाती है जब केदारनाथ में अचानक से तेज़ वर्षा के कारण हुए भूस्खलन के कारण दयाल मलबे में दब जाता है और अपने प्राण गवाँ बैठता है | मलबे में फँसे दयाल को बचाने की छटपटाहट उसकी अपने मालिक के प्रति प्रेम भावना को दर्शाती है, वहीं उसे न बचा पाने की ग्लानि तथा उसे अपनी आँखों के सामने मरते हुए देखने की घटना डब्बू को अंदर तक साल जाती है | पिता समान मालिक की मृत्यु तथा उनके प्राणों की रक्षा न कर पाने की टीस व पीड़ा को वह केवल रोकर और ज़ोर-ज़ोर से हिनहिनाकर व्यक्त करता है |

'*अपने ही जाल में*' एक ऐसी स्त्री की कहानी है, जो अपने पति की बेरोज़गारी, निठलेपन और शराब पीने की आदत से तंग तथा परेशान हो चुकी थी | लोगों के घरों में काम कर अपनी गृहस्थी की गाड़ी चला रही *शांति* से अक्सर उसका पति *रामआसरे* लड़-झगड़कर उसकी जमापूंजी छीनकर ले जाता | पति के इस व्यवहार से ऊब चुकी शांति उसकी मृत्यु तक की कामना करती | घर-परिवार की चिंता से मुक्त रामआसरे का एक माह से घर से गायब रहने पर शांति अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु देहरादून पुलिस स्टेशन में जाकर यह रिपोर्ट लिखवाती है कि उसका पति केदारनाथ की यात्रा पर गया था और वहाँ आई आपदा का शिकार हो गया है और इस प्रकार घर की आर्थिक स्थिति की दुहाई देती वह सरकार द्वारा मृतकों के परिवारवालों को मिलने वाले छ: लाख रुपए बतौर मुआवज़ा की माँग करती है | इसके पीछे उसका स्वार्थ अपने बच्चों का भविष्य संवारना था | वह जानती थी कि उसका पति तो जीवन भर छ: लाख रुपए नहीं कम सकेगा, इसी कारण वह अपने पति की झूठी मृत्यु की रिपोर्ट करती है किन्तु उसका झूठ पकड़ा जाता है और उसकी समस्त आशाओं पर पानी उस समय फिर जाता है जब पुलिस उसे झूठ और फरेब के केस में लॉकअप में बंद कर देती है और वह अपने ही जाल में फँस कर रह जाती है | यह कहानी इस तथ्य की ओर इंगित करती है कि व्यक्ति चाहे विवशता में ही सही यदि गलत राह पर चले तो उसका फल उसे भोगना ही पड़ता है |

'*घर वापसी*' एक ऐसे बिगड़े लड़के की कहानी है जिसे माता-पिता के लाड-प्यार ने अत्यंत हठी और दम्भी बना दिया है | छुट्टी पर आए पिता अपने पुत्र की हर फरमाइश पूरी करते हैं क्योंकि उनके पास इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं | वह अपनी नौकरी में इतने व्यस्त रहते हैं कि पुत्र के साथ समय बिताने का उन्हें अवसर नहीं मिलता | अपनी इसी कमी को पूरा करने के लिए वह उसकी हर फरमाइश पूरी करते हैं जिसके परिणामस्वरूप *जग्गू* अपनी पढ़ाई की ओर से भी लापरवाह होने के कारण हाईस्कूल में तीन बार फेल हो जाता है; पर इससे भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता | बिगड़ती और बढ़ती गलत आदतों के चलते वह कुसंगति में पड़ पहले चोरी तत्पश्चात लोगों को डराने-धमकाने लगता है | पुत्र की कुसंगत, बुरी आदतों तथा उसके कारण पूरे गाँव में हुए अपने अपमान के चलते *जबर सिंह* (उसके पिता) उसे घर से निकाल देते हैं | घर से निष्कासित हुआ जग्गु होटल और रेस्तरां वालों से पैसे वसूलता | वह वहाँ के निवासियों के लिए गले की हड्डी बन गया था, किन्तु अचानक उसके व्यवहार में तब परिवर्तन आ जाता है जब केदारनाथ में आई प्राकृतिक आपदा चारों ओर

भयंकर वातावरण उत्पन्न कर देती है | नदी में आई बाढ़ और बढ़ते जलस्तर के कारण किनारे पर बने घर बह जाते हैं | चारों ओर फैली विनाश लीला को देख जग्गु का मन सिहर उठता है | वह जग्गु जो अपने व्यवहार से सब की मुसीबतों का कारण बन बैठा था, जिससे सभी घृणा करते थे, वह अकस्मात ही इतना बदल जाता है कि लोगों की घृणा, आसीस और प्यार में परिवर्तित हो जाती है | पीड़ितों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाना, उनके लिए दवाइयों, भोजन तथा अन्य वस्तुओं की व्यवस्था करना आदि उसके मन को असीम प्रसन्नता व शांति पहुंचाता है | एक माह तक आपदा पीड़ितों की सहायता व सेवा करने पश्चात् वह इतना बदल जाता है कि अपनी गलतियों का अहसास कर पिता से क्षमा माँग स्वीकारता है कि वह भटक गया था परन्तु अब पुन: घर वापिस लौट आया है |

'झगड़े का समाधान' कहानी ऐसे दो चचेरे भाइयों की कथा है जो पिता के समय से चली आ रही शत्रुता को निभाते जा रहे हैं | उनकी इस शत्रुता को परम्परागत रूप से अब तीसरी पीढ़ी भी निभा रही है, अर्थात उनके बच्चे जो अभी स्कूल जाते हैं, में भी यह शत्रुता विद्यमान हो चुकी है | सम्पति के झगड़े ने उन्हें एक-दूसरे के खून का प्यासा बना दिया है | *अमर सिंह* और *सोबत सिंह* में एक ज़मीन के टुकड़े को लेकर रस्साकशी इतनी तन चुकी थी कि सम्पति को लेकर पंचायत से लेकर कोर्ट तक वे लोग पहुंच जाते हैं | दोनों परिवारों में बढ़ती जा रही ईर्ष्या, द्वेष व घृणा ने गांववालों को इस शंका में डाल दिया कि न जाने कब कौन किसके घर में जाकर बवेला कर दे या उसकी जान ही ले ले | उनकी पत्नियाँ भी एक-दूसरे को कोसने या ताना देने का कोई अवसर नहीं छोड़तीं |

गाँव में लगातार दो दिनों से हो रही वर्षा के चलते पहाड़ी पर हुए वज्रपात के कारण आए मलबे से अमर सिंह के घर, गौशाला आदि बर्बाद हो जाते हैं | घर से बेघर हो चुके अमर सिंह इस चिंता में डूबे थे कि अपने परिवार को लेकर कहाँ जाएँ ? उन्हें तथा गांववालों को इस बात कि आशंका थी कि सोबत सिंह इस अवसर का लाभ उठाकर उन्हें गाँव से ही निकालने का प्रयास करेगा | गाँववाले उसे पंचायत घर में रहने का उपाय देते हैं, किन्तु सोबत सिंह उनकी आशा के विरुद्ध उसे कहीं ओर जाने न देकर अपने घर ले जाने की बात कर सबको आश्चर्यचकित कर देता है | इस आपदा ने हर किसी को भयभीत कर दिया था | इसी भय ने उनके आपसी बैर को प्रेम में बदल दिया, उनकी अंदर की संवेदना यकायक जाग उठी |

इसी प्रकार के हृदय एवं विचारों के परिवर्तन को दर्शाया गया है कहानी *'वो देख रहा है...'* में | यह एक ऐसी संवेदनशील कहानी है जिसमें बुरी से बुरी स्थिति में भी ईश्वर के प्रति उसकी आस्था उसे पथभ्रष्ट नहीं होने देती | *लखन* नामक युवक केदारनाथ आए यात्रियों को कंडी में बैठाकर दर्शन स्थल तक ले जाता था | केदारनाथ में आई जल-प्रलय के समय एक गुजराती महिला, लखन को उनकी (उस दम्पति) जान बचाने के बदले में लगभग एक लाख रुपए देने का प्रस्ताव रखती है | बचपन से लेकर युवा अवस्था तक केवल

विषमताओं व कठिनाइयों भरा जीवन व्यतीत करने वाला लखन अक्सर यह सोचता कि धन व्यक्ति को सभी चिंताओं से मुक्ति दिलवा सकता है | इसके बलबूते पर मनुष्य कुछ भी कर सकता है, किन्तु उस प्रलय में धन-संपन्न दम्पति की लाचारी देख उसे अहसास होता है की पैसा हर समय काम नहीं आता | इसके होने पर भी कई बार जान पर बन आती है | जैसा कि कबीरदास जी ने कहा है –

"माया मरी न मन मरा, मर मर गये शरीर |
आशा तृष्णा ना मरी, कह गये दास कबीर ||"[1]

अर्थात शरीर, मन, माया सब नष्ट हो जाता है परन्तु मन में उठने वाली आशा और तृष्णा कभी नष्ट नहीं होती | इस दोहे के अर्थ को *लखन* सार्थक रूप से सिद्ध करता है | वर्तमान में जिजीविषा हेतु की जाने वाली अथक मेहनत के बावजूद विषमतापूर्ण जीवन व्यतीत करना और सुविधाजनक भविष्य के सन्दर्भ में सोचकर उसके मन में लालच उत्पन्न होती है, जिसके चलते वह उन्हें मौत के घाट उतारने का विचार करता है, किन्तु बाबा केदारनाथ के मंदिर के दूर से ही दर्शनमात्र पर ही उसके मन से उन्हें मारने का ख्याल चंपत हो जाता है | उसके मनोमस्तिष्क में यह बात बिजली की भांति कौंध जाती है की अज्ञानतावश वह यह समझ बैठा था कि उसके कुकृत्य को कोई नहीं देख रहा, परन्तु वह यह भूल गया था कि ईश्वर सब देखता है | यह विचार आते ही वह पश्चाताप करते हुए ईश्वर से क्षमा याचना कर सच्चे मन से उस दम्पति की सहायता करने के पश्चात् गर्व और सुकून के साथ अन्य ज़रुरतमंदों की सहायता हेतु निकल पड़ता है |

'पीड़ा से भी ऊपर', निशंक जी की भाव प्रधान कहानी है, जिसमें प्राकृतिक आपदा के मारे *उखीमठ* के राहत शिविर में रह रहे लोगों की पीड़ा, सरकार द्वारा राहत न मिल पाने और अपने स्वजनों को खोने व बच्चों को बिलखते देख आक्रोश व्यक्त करते लोगों का वर्णन किया गया है | आलोच्य कहानी में एक ओर कहानीकार ने दैवी प्रकोप के शिकार हुए लोगों को चीखते-चिल्लाते अपनी पीड़ा को व्यक्त करते दिखाया है, वहीं *सुशीला* नामक एक ऐसी महिला का भी उल्लेख किया है जो इस प्रलय काल में अपने घर के साथ-साथ परिवार को खो देने पश्चात् केवल चुप्पी साधे मूर्तिवत बन अपनी व्यथा, पीड़ा और दुःख को अंदर-ही-अंदर सहन करती है | उसे देख ऐसा लगता मानो वह एक जीती-जागती लाश हो, जिसके अंदर जीने की इच्छा जैसे मर चुकी थी | "दोनों बच्चों और माँ को सोमवार को देहरादून जाना था | शनिवार को दोनों भाई पिता से मिलने केदारनाथ चले गए | रविवार को माँ उनकी वापसी की प्रतीक्षा करती रही, लेकिन वे दोनों भाई पिता सहित लाज में ही .. |"[2] यह कहना असंगत न होगा कि कई बार व्यक्ति की पीड़ा उस सीमा को पार कर जाती है कि वह उस असहनीय पीड़ा में ही कहीं डूब कर रह जाता है |

'रिश्तों का भ्रमजाल' कहानी के माध्यम से लेखक ने वर्तमान समय में स्वार्थ के कारण रिश्तों के प्रति हो रहे मोह-भंग को दर्शाया है | प्रेम जीवन का आधार है तो विवाह समाज में पारम्परिक रूप से महत्वपूर्ण और

पवित्र बंधन है, किन्तु यही बंधन यदि अंतर्जातीय प्रेम विवाह के रूप में अपना अस्तित्व स्थापित करना चाहे तो समाज को वह मान्य नहीं | अंतर्जातीय प्रेम विवाह करने के कारण *सुमन* और *राजीव* के परिवार उनसे अपने सारे रिश्ते-नाते तोड़ देते हैं; यहाँ तक कि राजीव के पिता उसे अपनी सम्पति से भी बेदखल कर देते हैं | समय के साथ वे दोनों अथक परिश्रम कर एक स्कूल खोलते हैं और अपनी एक नई दुनिया बसा लेते हैं जिसमें वे दोनों अपने बच्चों के साथ सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं | परिवार द्वारा उनसे सारे संबंध तोड़ दिए जाने के बावजूद भी राजीव के मन में कहीं-न-कहीं उनसे पुन: मिलने की आस बंधी रहती है |

केदारनाथ की यात्रा पर गए इस पूरे परिवार की जब वहाँ आए प्रलय पश्चात् कोई सूचना नहीं मिलती तो राजीव के दोनों भाई जो कि आठ साल पहले ही उनसे अपने सारे संबंध तोड़ चुके थे उनके स्कूल पर अपना अधिकार जमा सारा कार्यभार संभालते हैं और पिता उनके लापता होने की रिपोर्ट लिखाते हैं जिसके चलते डेढ़ माह पश्चात् भी उनकी कोई सूचना न मिलने के कारण प्रशासन उन्हें मृतक घोषित कर उनके परिवार को चौबीस लाख रुपए बतौर मुआवज़ा देती है | आपदा के दो महीने बाद राजीव और उसके परिवार का जीवित लौट आना सब को आश्चर्यचकित करता है, वहीं दूसरी ओर वर्षों पश्चात् अपने परिवारवालों को पुत्र की अपेक्षा उसकी सम्पति तथा उसकी मृत्यु पश्चात् मिलने वाले मुआवज़े के प्रति मोह को देखकर उसका रिश्तों के मायाजाल से विश्वास उठ जाता है |

वर्तमान समय में जहाँ लोग स्वार्थी प्रवृति के कारण अपनों को भी लूटने या धोखा देने से बाज़ नहीं आते, वहीं कुछ ऐसे ईमानदार और विश्वसनीय लोग भी हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी जान-ओ-माल की परवाह न करते हुए दूसरों की सहायता करने से लेश मात्र भी नहीं घबराते | ऐसा ही एक पात्र है *'कितना खुद्दार'* कहानी का *मंगल सिंह* | निम्न मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित मंगल सिंह सरकारी योजना तहत साढ़े चार लाख रुपए ऋण लेकर एक टैक्सी खरीदकर ट्रेवलिंग एजेंसी के माध्यम से यात्रियों को ऋषिकेश, बाबा केदारनाथ मन्दिर तक ले जाने का कम करता है | केदारनाथ की यात्रा के दौरान सोनप्रयाग के पड़ाव पर आई बाढ़ के कारण सब लोग अपने प्राणों की रक्षा हेतु पहाड़ी की ओर दौड़ते हैं, पर मंगल सिंह अपने बारे में सोचने की अपेक्षा अपनी सवारी / मुसाफिरों के सामान की रक्षा करता है और अंततः उनका सामान और उसमें रखे पचहतर हज़ार रुपए उन तक पहुँचाता है | इस सब भाग-दौड़ में वह अपनी गाड़ी के इंश्योरेंस के कागज़ नहीं निकाल पाता जिसके चलते वह मुआवज़ा पाने से वंचित रह जाता है | उसे अपनी हानि का इतना दुःख नहीं होता बल्कि इस बात से ख़ुशी और सन्तुष्टता मिलती है कि वह किसी की अमानत बचाने और उस तक पहुँचाने में सफल हुआ | मंगल सिंह के माध्यम से कहानीकार ने इस सत्य को उभारा है कि आज भी कुछ लोग स्वार्थ और लालच के ऊपर ईमानदारी, खुद्दारी और कर्तव्यपरायणता को रखते हैं, जिनके समक्ष स्वयं ही अपने-आप सब नतमस्तक हो जाते हैं |

जीवन के यथार्थ को दर्शाती निशंक जी की सशक्त कहानी है *'ज़िन्दगी रुकती नहीं'* | यह प्राकृतिक विभीषिका में गुम हुए लोगों से पुन: मिलन की आस, उनके जीवित होने की आशा लेकर उन्हें बार-बार ढूंढने और जीवन को नए सिरे से शुरू करने की मार्मिक कहानी है | लेखक तथा उनके मित्र केदारनाथ यात्रा के महाविनाश में लापता हुए उसके (मित्र के) माता-पिता का पांच माह बाद भी न मिलने पर उनसे दोबारा मिलने की उम्मीद के चलते उन्हें पुन: ढूंढने जाते हैं | पांच महीने पहले महाप्रलय के कारण चारों ओर फैले जिस विनाश को देखकर वह सिहर उठे थे, वहीं अब पुन: उस उजड़े स्थल पर रंग-बिरंगे टेंट और राफ्ट तथा हलचल देखकर उन्हें विस्मय के साथ-साथ प्रसन्नता का अनुभव भी होता है | उस दृश्य को देखकर स्मरण हो आए *श्रीकांत* की तलाश करते हुए उनका उसके छोटे भाई *रमाकांत* से भेंट होने पर यह ज्ञात होना कि उस विनाश्कालीन रात्रि में अपने जीवन भर की पूंजी को बचाने की कोशिश में श्रीकांत भी काल के गाल में चला गया, उन्हें अत्यंत दुःख पहुंचाता है | भाई के चले जाने, प्रलय की भेंट चढ़ चुके घर तथा खेत के कारण उनके परिवार का सड़क पर आना उसके लिए असहनीय हो जाता है, जिसके फलस्वरूप वह भी उसी जोखिम भरे व्यवसाय को अपनाता है | रमाकांत का जीवन तथा व्यवसाय को उत्साहपूर्वक दोबारा शुरू करते हुए लेखक से कहना कि ज़िन्दगी रुकती नहीं एक सामान्य व्यक्ति का कठिन से कठिन परिस्थिति में भी हार न मानते हुए, जीवन की विषमताओं से जूझते रहने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के हौंसले को दर्शाता है |

इसी प्रकार उनकी एक और कहानी *'भीड़ के बीच'*, में *धनमती* नामक महिला जो बारह वर्ष पूर्व नेपाल से पति *दलबहादुर* के संग रोज़ी-रोटी की तलाश में गौरीकुंड आ बसी थी की व्यथा कथा है | अपनी कड़ी मेहनत और लग्न से सब्ज़ी उत्पादन तथा दूर-दूर के बाज़ार में उसके सप्लाई के काम के साथ-साथ उसका पति यात्रियों को लेकर गौरीकुंड जाता | पति व तीन बच्चों के संग सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रही धनमति की ज़िन्दगी में तब अचानक एक भयंकर और कष्टदायक मोड़ आता है जब उसके पति और दो पुत्र गौरीकुंड में आई भीषण बाढ़ और उसके खेत तथा घर गाँव में आए भयंकर भूस्खलन के कारण बरसाती नाले के भेंट चढ़ जाते हैं | किसी प्रकार अपने तीन वर्ष के बच्चे और अपनी जान बचाते हुए गुप्तकाशी पहुंची धनमति को किसी भी प्रकार की सरकारी राहत नहीं मिलती | पुलिस तथा सरकारी विभाग के कर्मचारी राहत शिविरों से लेकर होटलों, बंगलों में रह रहे आपदा पीड़ितों की सहायता कर रहे थे, वहीं धनमति को नेपाली होने के कारण विदेशी कहकर हर बार धुत्कार दिया जाता | इतना ही नहीं आपदा पीड़ितों से मिलने आए मंत्री जी भी उसकी गुहार सुनने के पश्चात् उसे सांत्वना देने की अपेक्षा नेपाल भेजने की व्यवस्था का आश्वासन देकर वहाँ से चले जाते हैं और वह उस भीड़ में भी अकेली खड़ी रह जाती है |

आलोच्य संग्रह में संकलित अन्य कहानियाँ जैसे *'मुआवज़ा'* सेठ द्वारा मज़दूर को दिए धोखे और परिवार को मिलने वाले मुआवज़े की खातिर किए आत्म-बलिदान की कहानी है, *'पानी और पानी'* में एक

हठी, घमंडी स्त्री के हृदय परिवर्तन को दिखलाया है | प्रेम, विश्वास, संकीर्ण मानसिकता तथा परिस्थित अनुसार लोगों की परिवर्तित होती सोच की कहानी है *'लौट आया हूँ'* | इनके अतिरिक्त सेवा भाव, लालची प्रवृति, आपदा के समय में भी प्रशासन की लापरवाही, रिश्वतखोरी, दैवी प्रकोप को देख लोगों के व्यवहार तथा मन में आए बदलाव, अमानवीयता, लोगों की स्थिति से परिचित होकर भी जानबूझकर अनभिग्य बने रहने की चेष्टा करना, परोपकारी भावना, संवेदना, अपनेपन को चित्रित करती हैं *'इक रिश्ता दिल का'*, *'तलाश अपनों की'*, *'लौटकर आएगा'*, *'नोटिस'* , *'सब उसका है'*, *'सब एक जैसे नहीं होते'*, *'ज़िंदा हूँ किसी और के लिए'*, *'अनजान'* नामक कहानियाँ |

अत: यह कहना असंगत न होगा कि निशंक जी की कहानियाँ मानवता, भावुकता, एकता, प्रेम, आस्था, विश्वास, अपनेपन, संवेदनशीलता जैसे मानव मूल्यों का वर्णन करते हुए भेदभाव, लोलुपता, बनावटीपन, दिखावा तथा असंवेदनशीलता का भी वर्णन करती हैं | आलोच्य कहानी-संग्रह के माध्यम से कहानीकार ने जीवन में संघर्षरत रह लोगों को विषमताओं से हार न मानते हुए सकारात्मकता से आगे बढ़ते दिखाया है तथा पाठकों को भी सदा सकारात्मक बन अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने की प्रेरणा प्रदान की है |

इसी प्रकार की प्रेरणा हमें कथा सम्राट *प्रेमचंद* के कथा साहित्य से मिलती है | उनके साहित्य की प्रासंगिकता ही है कि उनके साहित्य को आज भी पढ़ने पर वह नित्य नया लगता है , क्योंकि प्रेमचंद युग में जो समस्याएँ व सामाजिक स्थिति थी वे आज भी ज्यों की त्यों अपने विकराल रूप में विद्यमान हैं | वर्तमान समय में भी कमलाचरण (वरदान) की भांति पुत्र धनवान पिता की सम्पति का दुरूपयोग करते नज़र आता है | आज भी घीसू-माधव (कफ़न) जैसे लोग जहाँ -तहां दिखाई दे जाते हैं जो नशे में धुत रह परिवार को भूल जाते हैं | हलकू (पूस की रात) समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जिसपर भूख तथा ठंड अपनी नैसर्गिक उग्रता के साथ इस प्रकार से मानव पर हावी हो जाते हैं कि उसकी मानवता को ही नष्ट कर देते हैं |

क्या आज हीरा-मोती (दो बैलों की कथा) जैसे मालिक के प्रतिबद्ध व अत्यन्य प्रेम करने वाले पशु तथा झूरी जैसे आत्मीयता रखने वाले मालिक के अतिरिक्त झूरी की पत्नी, उसके भाई, मुंशीजी तथा दढ़ियल आदमी जैसे व्यक्ति हमारे समाज में अस्तित्व बनाए हुए नहीं हैं | क्या आज रमानाथ जैसे मध्य वर्गीय युवक (गबन) समाज से विलुप्त हो चुके हैं , जो मिथ्या प्रदर्शन के कारण धोखा करता है या देशभक्त दवीदीन खटिक के समान पिता जो देशहित के चलते अपने पुत्रों को गवांकर भी देशभक्ति से अभिभूत है | वर्तमान समय में भी पाखंडी, सूदखोर समरकान्त (कर्मभूमि) जैसे लोगों की कमी नहीं, तो वहीं विभिन्न विसंगतियों का शिकार होकर तिल-तिल मरता हुआ होरी (गोदान) भी जहाँ-तहाँ मिल ही जाता है | आनंदी (बड़े घर की बेटी) जैसी घर को टूटने-बिखरने से बचाने वाली महिलाओं की भी कमी हमारे समाज में नहीं, जो व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं अपितु परिवार को अधिक महत्व देती हैं | तात्पर्य यह है कि प्रेमचंद द्वारा चित्रित समस्याएँ तथा विसंगतियां

आज भी उसी प्रकार विकराल रूप धारण कर मुँह बाए खड़ी हैं | अत: कहा जा सकता है कि प्रेमचंद वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं और उनकी इसी प्रासंगिकता की झलक हमें निशंक जी की कहानियों में भी देखने को मिलती है |

संदर्भ सूची :

1. Kabir Dohas ,Online Darshan ,https//:onlinedarshan.com
2. निशंक ,रमेश पोखरियाल ,*केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियाँ* 97 .पृ ,

श्रीनगर, कश्मीर